

**अपौरुषेय वि.** (तत्.) 1. जिसमें पौरुष का अभाव हो, डरपोक कायर 2. अलौकिक पुरुष की शक्ति से बाहर का जैसे- वेद अपौरुषेय हैं।

**अप्रकंप वि.** (तत्.) कंपनहीन, स्थिर। विलो. प्रकंप।

**अप्रकट वि.** (तत्.) 1. जो सामने न हो, जो प्रकट रूप में न हो, छिपा हुआ 2. अनभिव्यक्त भाषा. व्यक्त रूप में न होने पर भी परिवेश से ज्ञात, जैसे 'अनेक घर' में घर का बहुवचनत्व 3. प्रच्छन्न, गूढ़, छिपा हुआ 4. अप्रत्यक्ष।

**अप्रकटित वि.** (तत्.) दे. अप्रकट।

**अप्रकटित आय स्त्री.** (तत्.) वह आमदनी या आमदनी का वह हिस्सा जिसका उल्लेख आयकर विवरणी में न किया गया हो। undisclosed income

**अप्रकरण पुं.** (तत्.) 1. जो प्रकरण या मुख्य विषय से संबंधित न हो 2. अप्रासंगिक, असंबद्ध 3. आकस्मिक विषय विलो. प्रकरण।

**अप्रकांड वि.** (तत्.) 1. जो उत्तम या सर्वश्रेष्ठ नहीं हो 2. (प्रकांड अर्थात्) वृक्ष के तने या शाखा से भिन्न या इनसे रहित।

**अप्रकाश पुं.** (तत्.) प्रकाश का अभाव, अंधकार विलो. प्रकाश।

**अप्रकाशनीय वि.** (तत्.) 1. प्रकाश या प्रकट करने योग्य नहीं हों 2. पत्र. किसी कारण प्रकाशित करने के लिए अयोग्य।

**अप्रकाशित वि.** (तत्.) 1. जो सर्वसाधारण के सामने न रखा गया हो 2. जो प्रकाशित न हो, प्रकाश-रहित 3. छिपा हुआ, गुप्त विलो. प्रकाशित।

**अप्रकाश्य वि.** (तत्.) दे. अप्रकाशनीय।

**अप्रकृत वि.** (तत्.) 1. जो मूल या मुख्य न हो 2. प्रस्तुत विषय से असंबद्ध 3. अप्राकृतिक, कृत्रिम, बनावटी।

**अप्रकृति स्त्री.** (तत्.) 1. प्रकृति या स्वाभाविक रूप का अभाव 2. विकृति।

**अप्रकृतिस्थ वि.** (तत्.) 1. जो अपने मूल स्थिति में न हो 2. स्वाभाविक अवस्था से रहित, रोगी, अस्वस्थ 3. बेचैन, परेशान।

**अप्रकृष्ट वि.** (तत्.) जो प्रकृष्ट (उत्कृष्ट या प्रधान) न हो 1. क्षुद्र 2. हीन 3. बुरा 4. निम्न पुं. (तत्.) कौवा।

**अप्रखर वि.** (तत्.) 1. जो तेज न हो 2. मृदु, कोमल 3. आलसी विलो. प्रखर।

**अप्रगंड वि.** (तत्.) आयु. जिसका शरीर भुजाहीन हो।

**अप्रगंडशीर्षता स्त्री.** (तत्.) प्राणी. शरीर में सिर और भुजाओं का न होना।

**अप्रगल्भ वि.** (तत्.) 1. अपरिपक्व, अप्रौढ़ 2. विनम्र 3. ढीला विलो. प्रगल्भ।

**अप्रचलन पुं.** (तत्.) सा.अर्थ. प्रचलित न होने की स्थिति या भाव बाणि. नई तकनीक के आविष्कार के फलस्वरूप पुराने उपकरणों का अनुपयोगी हो जाना, जैसे- इलेक्ट्रॉनिक कॉपीयर के बाजार में आ जाने से डुप्लिकेटिंग मशीन अप्रचलित हो गई हैं।

**अप्रचलित वि.** (तत्.) 1. जो प्रचलन में न हो, अप्रयुक्त 2. लुप्त विलो. प्रचलित।

**अप्रचारित वि.** (तत्.) जिसका प्रचार-प्रसार न किया गया हो विलो. प्रचारित।

**अप्रचोदित वि.** (तत्.) 1. अप्रेरित, अनाजप्त, अनिर्दिष्ट 2. अवांछित।

**अप्रच्छन्न वि.** (तत्.) 1. जो प्रच्छन्न अर्थात् ढका या छिपा न हो, खुला हुआ, विवृत 2. स्पष्ट विलो. प्रच्छन्न।

**अप्रज (अप्रजक) वि.** (तत्.) संतान रहित (व्यक्ति), मानव-रहित (बस्ती) ।

**अप्रज वि.** (तत्.) प्रजाशून्य, मंदबुद्धि, बुद्धिहीन, मतिमंद पुं. मूर्ख।

**अप्रतिकर वि.** (तत्.) विपरीत (कार्य) न करने वाला, विश्वासपात्र, विश्वस्त।